"सृजनात्मकता के प्रकार"

Types of Creativity

टॉरेन्स (Tarrance E.P) के अनुसार ⇒ इन्होंने सृजनात्मकता को दो भागों में बाँटा है —

सृजनात्मकता

- शाब्दिक सृजनात्मकता (Verbal Creativity)
- अशाब्दिक-सृजनात्मकता (Non-Verbal Creativity)

(1) शाब्दिक सृजनात्मकता

अर्थ = वह सृजनात्मकता जिसको भाषा तथा शाब्दिक सामग्रियों के रूप में प्रकट किया जाता है। जैसे — कहानी, लिखना, चुटकुला बनाना आदि। मानसिक योग्यता को भी शाब्दिक सृजनात्मकता कहेंगे।

(2) अशाब्दिक-सृजनात्मकता

वह सृजनात्मकता जिसको आकृति, रेखा, अशाब्दिक सामग्री द्वारा प्रकट किया जाय जैसे — चित्रकारी करना, खिलौना बनाना आदि

Scanned with CamScanner

रूप में प्रकट किया जाता है। जैसे — कहानी, लेखन

2 चुटकुला बनाना आदि। मानसिक योग्यता को भी शाब्दिक सृजनात्मकता कहेंगे।

3

(2) अशाब्दिक - सृजनात्मकता

4 वह सृजनात्मकता जिसको आकृति, रेखा, अशाब्दिक सामग्री द्वारा प्रकट किया जाय जैसे — चित्रकारी करना, खिलौना बनाना आदि

5

6

सृजनात्मकता की विमाएँ (मापन (पहचान लक्षण)

7 सृजनात्मकता के प्रकारों के आधार पर ही सृजनात्मकता की कुछ विमाएं भी हैं जिन्हें टॉरेन्स ने दो भागों में बांटा है।

सृजनात्मकता की विमाएँ

शाब्दिक सृजनात्मकता की विमाएँ

1 — धाराप्रवाह (2) लचीलापन (3) मौलिकता

अशाब्दिक सृजनात्मक की विमाएँ

(1) विस्तारण (2) मौलिकता (चित्रा द्वारा अनुक्रिया)

सृजनात्मकता के प्रकार

1. आकस्मिक सृजनात्मकता – वह सृजनात्मकता जो अचानक (भाग्यवश) हो।
2. सहज सृजनात्मकता – वह सृजनात्मकता जो तात्कालिक परिस्थिति में उत्पन्न होती है।
3. संरक्षात्मक सृजनात्मकता – वह सृजनात्मकता जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुँचे जैसे कुम्हार का पुत्र अच्छे बर्तन बना लेता है।

सृजनात्मकता विकास की अवस्थाएँ / प्रक्रिया

मन (Munn)! – अपनी पुस्तक "Introduction to Psychology"

1 – तैयारी की अवस्था (Preparation) समस्या का चयन, समस्या को एक तरफ रखना
2 – उद्भवन (incubation) प्रकाशोद्दीपन, प्रेरणा / सहज बोध
3 – उद्भासन (inspiration or Illumination)
4 – मूल्यांकन (Evulation)
5 – पुनरावर्तन (Revision)

(1) तैयारी की अवस्था

2 - उदभवन (Preparation) समस्या का चयन Psychology
3 - उदभासन (Incubation) समस्या को एक तरफ रखना
4 - मूल्यांकन (Inspiration or Illumination) प्रेरणा / सहजबोध
5 - पुनरावर्तन (Evaluation) (Revision)

① तैयारी की अवस्था

इस अवस्था में समस्या पर गम्भीरता से कार्य आरम्भ किया जाता है और यह तब तक जारी रहता है जब तक संभव हो। समस्या का प्रारंभिक विश्लेषण किया जाता है और उसके समाधान के लिये मंच तैयार किया जाता है। आवश्यक तथ्यों तथा सामग्री को एकत्रित किया जाता है, उनका विश्लेषण किया जाता है। बीच-2 में योजना में सुधार किया जाता है। विधि को भी बदला जा सकता है। कभी-2 समस्या का समाधान नहीं कर पाते, निराश हो जाते हैं इस समस्या को कुछ देर के लिये छोड़ देना चाहिए।

② उदभवन (Incubation)

वह प्रक्रिया जब किसी समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा होता उस समस्या को कुछ समय के लिये शांत / दूर रख देना चाहिए उसे उदभवन या समस्या को एक ओर रखना कहते हैं। इस अवस्था में समस्या पर चिंतन भी बंद हो जाता है। इस अवस्था में हम विश्राम कर सकते हैं। सो सकते हैं। मनोरंजक कार्य कर सकते हैं ऐसा करने से विचार मद्धम होने लगते हैं जो समस्या में बाधक बन रहे थे। इसप्रकार

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	FEBRUARY
-	-	-	-	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	-	-	-	— 2019 —

अचेतन मन काम करने लगता है। उदाहरण - आर्कीमिडीज को अपनी समस्या का समाधान तब मिला जब वह नहा रहे थे।

सृजनात्मकता को उन्नति (विकास) हेतु सुझावों / उपायों का वर्णन

Measures (उन्नति)
Suggestions (उपाय)

"Suggestions for Fostering Creativity"
or
"Measures for Creativity enhancement"

सृजनात्मकता को विकसित / पोषित करने के लिए उचित वातावरण एवं देखरेख की आवश्यकता होती है। उसे उचित प्रशिक्षण दिया जाए, शिक्षा, अवसर दिए जाए ताकि वह सृजनशील बन सके। सृजनात्मकता सार्वभौमिक होती है। इस पर किसी एक व्यक्ति का एकाधिकार नहीं होता है।
अध्यापकों व माता-पिता का यह आवश्यक है कि वह बालकों की सृजनात्मक योग्यता के विकास को उचित वातावरण व अवसर दें, शिक्षा दें आदि उचित अभिप्रेरणा व वातावरण, परिस्थिति से सृजनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है — मौलिकता, लचीलापन, रचनात्मक, विचारधारा, विभिन्न आत्मविश्वास, सतत परिश्रम, संवेदनशीलता, संबन्धों को देखना बनाने की योग्यता आदि कुछ योग्यताओं है जिनका विकास सृजनात्मकता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। इन योग्यताओं को विकसित करने के लिए निम्नलिखित सुझाव सहायक सिद्ध हो सकते हैं जैसे —

1. उत्तर देने की स्वतन्त्रता।
2. झिझक और डर को दूर करना।
3. आत्म-अभिव्यक्ति के लिए अवसर।
4. मौलिकता तथा लचीलेपन को प्रोत्साहित करना।
5. सृजनात्मकता अभिव्यक्ति के लिए उचित अनुकूल वातावरण प्रदान करना।
6. बच्चों में स्वस्थ आदतों का विकास करना।
7. समुदाय के सृजनात्मक साधनों का प्रयोग करना।
8. अपना उदाहरण एवं आदर्श प्रस्तुत करना।
9. सृजनात्मकता चिंतन के अवरोधों से बचना।
10. पाठ्यक्रम का उचित आयोजन।
11. मूल्यांकन प्रणाली में सुधार।
12. आत्म सजगता
13. स्वयं निर्णय लेने की क्षमता।
आदि

Scanned with CamScanner

सृजनशीलता का आधार
Basis of Creativity

J.P. गिलफोर्ड के अनुसार — " सर्जनात्मक का आधार चिंतन है। चिंतन और सर्जन के संबन्ध में सर्वप्रथम विचार गिलफोर्ड ने विचार किया।

गिलफोर्ड के अनुसार सृजनात्मकता के अन्तर्गत 5 मानसिक व्यवहारों को रखा है —

1— संज्ञान (Congnition) — मानसिक योग्यता
2. स्मृति (Memory)
3 — अपसारी चिंतन (Divergent Thinking) — सृजनात्मकता
4 — अभिसारी चिंतन (Convergent Thinking) (बुद्धि से सम्बन्धित)
5 — मूल्यांकन (Evaluation)

अपसारी चिंतन का अर्थ! — जब किसी बालक को चिन्तन के अनेक विकल्प और विचारों को अलग-2 दिशाओं में फैलाने का ...

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner